रॉबर्ट वानॉय , निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 8बी

न्यायाधीशों का परिचय

चतुर्थ. न्यायाधीशों की पुस्तक

ए. परिचयात्मक टिप्पणियाँ

चलिए रोमन अंक IV पर चलते हैं। जो "न्यायाधीशों की पुस्तक" है। A. उसके अंतर्गत "परिचयात्मक टिप्पणियाँ" है। मैं पुस्तक के परिचय के माध्यम से कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। जजों की कहानियाँ जोशुआ की मृत्यु और सैमुअल के जन्म के बीच की अवधि में सेट की गई हैं। यहोशू की पुस्तक के ठीक अंत में यहोशू की मृत्यु हो जाती है; यहोशू 23 और 24 में, यहोशू "सारी पृथ्वी पर जाने वाला है।" फिर जब आप 1 शमूएल के पहले अध्याय में आते हैं, तो आपके सामने शमूएल का जन्म होता है। यहोशू की मृत्यु और सैमुअल के जन्म के बीच न्यायाधीशों की नियुक्ति तय है। रूथ की छोटी किताब भी है, जो न्यायाधीशों और 1 सैमुअल के बीच डाली गई है। यदि आपको याद हो, तो रूथ की पहली कविता कहती है, "उन दिनों में जब हम न्यायाधीशों का न्याय करते हैं Israel..." इसलिए रूथ को न्यायाधीशों के समय के भीतर इतिहास में स्थापित किया गया है। यह संभवतः लगभग 300 वर्ष की अवधि है।

अब मैं पुस्तक के कालक्रम के बारे में थोड़ा और आगे कहना चाहता हूं, लेकिन यह संभवतः 300 साल की अवधि के आसपास है। जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो यह देश 300 वर्षों से भी अस्तित्व में नहीं है। 300 वर्ष बहुत लंबा समय है, और यह अपेक्षाकृत छोटी पुस्तक है। पुस्तक के केंद्र में छह व्यक्तियों, छह प्रमुख न्यायाधीशों के बारे में कहानियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक की स्वतंत्र कहानियाँ हैं। इसलिए आपके पास इस लंबे समय के इतिहास, जोशुआ से लेकर सैमुअल तक के समय की किसी भी तरह की पूरी व्यवस्थित चर्चा नहीं है।

जब आप इसे पढ़ेंगे तो आपको यह आभास हो सकता है कि यह प्रमुख न्यायाधीशों के बारे में शिथिल रूप से जुड़ी हुई व्यक्तिगत कहानी इकाइयों का एक संग्रह है। लेकिन मुझे लगता है कि यदि आप पुस्तक पर आगे विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जब लेखक ने इस सामग्री को एक साथ रखा तो उसके मन में वास्तव में एक उद्देश्य था। हालाँकि यह कहीं भी नहीं कहा गया है,

मुझे ऐसा लगता है कि उद्देश्य कुछ वैसा ही है जैसा कि बोर्ड में लिखा है: इतिहास के इस काल को इस तरह से Israelचित्रित करना कि धार्मिक और नैतिक गिरावट Israelके साथ-साथ धार्मिक कृत्यों को भी रोका जा सके। न्याय और मुक्ति लाने में वाचा-पालन करने वाला परमेश्वर। ये प्रमुख विषय हैं. Israelवे बार-बार प्रभु से विमुख हो जाते हैं, और इस कारण प्रभु उन्हें पड़ोसी लोगों के उत्पीड़न के अधीन करके उनका न्याय करते हैं। इस्राएली यहोवा की दोहाई देते हैं और वह एक न्यायाधीश, या एक उद्धारकर्ता, एक उद्धारकर्ता को खड़ा करता है। वह उनका उद्धार करता है; फिर उनके पास आराम और शांति का समय होता है, और फिर चक्र फिर से शुरू हो जाता है।

तो मुझे लगता है कि आपके पास इज़राइल के इतिहास की इस अवधि को इस तरह से चित्रित किया गया है जो उन विचारों को सामने लाता है: आप एक तरफ इज़राइल की धार्मिक नैतिक गिरावट देखते हैं, लेकिन फिर आप वाचा-पालन करने वाले भगवान के न्याय और न्याय दोनों लाने के धार्मिक कृत्यों को देखते हैं। मुक्ति-आशीर्वाद और शाप में सिनाई वाचा के प्रावधानों का अनिवार्य रूप से पालन करना और लोगों के जीवन में इसे कार्यान्वित करना।

1. यहोवा से दूर जाने में इज़राइल की आंतरिक कमजोरी पर जोर देता है। इसे ध्यान में रखते हुए, मुझे लगता है कि आप पुस्तक में निम्नलिखित जोर देखते हैं। पुस्तक Israelकनानियों के बुतपरस्त धार्मिक और नैतिक अभ्यास के प्रभाव में आकर यहोवा से विमुख होने की आंतरिक कमजोरी पर जोर देती है। डैन ब्लॉक ने जजेस और रूथ पर न्यू अमेरिकन कमेंटरी सीरीज़ में टिप्पणी लिखी (जो कि हाल ही में 1999 में प्रकाशित हुई है)। मुझे लगता है कि यह शायद जजों पर सबसे अच्छी टिप्पणी है। वह पूर्व-राजशाही काल में इज़राइल के कनानीकरण की बात करते हैं जैसा कि न्यायाधीशों की पुस्तक में वर्णित है। Israelप्रभु से विमुख हो जाता है और कनानियों के रीति-रिवाजों का अनुसरण करने लगता है।

अब, हम इस्राएलियों के प्रति काफ़ी आलोचनात्मक हो सकते हैं। यहाँ एक लोग हैं जिन्हें से बचाया गया था , Egyptमें Canaanलाया गया landथा, Jordanसमान रूप से चमत्कारी तरीके से पार किया गया था, और Jerichoमेरोम के पानी को ले लिया गया था। हालाँकि, Israelवह बस जाता है, और ऐसा करते हुए कनानियों के साथ निकट और विस्तारित संपर्क में आता है। कनानी धर्म

बहुदेववादी था और यह प्रकृति धर्म था। कनानियों के देवता प्रकृति की वैयक्तिकृत शक्तियाँ थीं, जिनमें प्रजनन क्षमता के विचार पर विशेष जोर दिया गया था।

इस्राएली इस भूमि पर आकर बस गए, और जंगल में भटकने के बजाय, उन्हें अचानक किसान बनना पड़ा। उन्हें फसलें उगानी थीं और मवेशियों का पालन-पोषण करना था। किसानों को यह जानना था कि ज़मीन की जुताई कब और कैसे करनी है और बीज कैसे बोना है, फ़सलों की कटाई कैसे करनी है, और यह काम सही समय पर सही तरीके से कैसे करना है। कनानी लोगों का उनके प्रशिक्षक बनना स्वाभाविक होगा।

लेकिन कनानी निस्संदेह उन देवताओं का सम्मान करने की आवश्यकता पर जोर देंगे जिन्होंने उन्हें बारिश दी, फसल प्रदान की, और प्रजनन क्षमता बढ़ाई। इन कनानी देवताओं के पालन में अनुष्ठान और त्यौहार आवश्यक होंगे अन्यथा उनके पास उत्पादक फसलें नहीं होंगी। आप नई भूमि पर आते हैं—आपको उस क्षेत्र के देवता की आराधना करनी चाहिए। सामान्य अवधारणा एक क्षेत्रीय देवता की थी। तो उस तरह के तर्क का पालन करने के लिए, आप समझ सकते हैं कि इस्राएलियों को बाल पूजा को यहोवा की पूजा के साथ जोड़ने के लिए कुछ समन्वयवाद में ले जाया जाएगा। मैं सोचता हूं कि न्यायाधीशों की पुस्तक में यही वर्णित है। वे उनके साथ बस गए, उन्होंने उनके साथ अंतर्जातीय विवाह किया और उन्होंने कनानी देवताओं की पूजा की।

इज़राइल के सामने समस्या यह थी कि उन्होंने इस्राएलियों के जीवन के तरीके और कनानियों के जीवन के तरीके के बीच इस मौलिक विरोधाभास को बनाए नहीं रखा था। इज़राइल के सामने समस्या यह थी कि उन्होंने इस्राएलियों के जीवन के तरीके और कनानियों के जीवन के तरीके के बीच इस मौलिक विरोधाभास को बनाए नहीं रखा था। कनानियों के जीवन का तरीका. उस विरोधाभास को बनाए रखना 'दायित्व' था । Israelउन्हें अलग होना था; उन्हें याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र बनना था। परमेश्वर के पास उनके लिए एक योजना थी; उन्हें आज तक अलग और अलग रहना था। इसके बजाय उन्होंने विरोध की उस रेखा को धुंधला कर दिया और इन लोगों के साथ समझौता कर लिया। वही समस्या आज एक अलग रूप में हमारे सामने आती है। आज विरोध चर्च और दुनिया के बीच है। आप इसे कैसे व्यवस्थित रखते हैं? आप ईश्वरीय जीवन शैली और जिस

संस्कृति में आप रहते हैं उसकी जीवन शैली के बीच अंतर को कैसे सुरक्षित रखते हैं? ये रेखाएँ कभी-कभी खींचना आसान नहीं होता, लेकिन यह वही समस्या है। Israelइन पंक्तियों को भ्रमित और धुंधला कर दिया, और परिणामस्वरूप वे प्रभु से विमुख होकर समन्वयवादी पूजा में बदल गये। इसलिए जोर Israelउनकी कमजोरियों पर है, जो बुतपरस्त धर्मों और कनानियों की नैतिक प्रथाओं के प्रभाव में हैं।

2. जोर एक अराजक सामाजिक स्थिति का चित्रण है जिसके कारण एक राजा की इच्छा पैदा होती है। दूसरा जोर एक अराजक सामाजिक स्थिति का चित्रण है जिसके कारण एक राजा की इच्छा पैदा होती है। जैसे-जैसे लोग प्रभु और वाचा की वफादारी से दूर होते गए, आप पाते हैं कि इसका परिणाम धार्मिक अराजकता था। आप पुस्तक के अंत में आते हैं और आपके पास निजी अभयारण्य और बाद के अध्यायों में एक उपपत्नी की हत्या है। पुस्तक के उन बाद के अध्यायों में आपको यह वाक्यांश मिलता है, "प्रत्येक व्यक्ति ने वही किया जो उसकी अपनी दृष्टि में सही था। " फिर कुछ बार आप उस वाक्यांश को दोहराते हैं और इसके साथ जोड़ते हैं "कोई राजा नहीं है Israel, हर किसी ने वही किया जो उनकी अपनी नज़र में सही था।" स्थितियाँ ऐसी हो गईं कि ऐसा लगने लगा कि देश को इस विघटित धार्मिक कानून संहिता से बचाने के लिए किसी प्रकार की केंद्रीय सत्ता की आवश्यकता है।

आप उस कथन को पुस्तक के अंत में न्यायियों 17:6 में पाते हैं: “उन दिनों में Israelकोई राजा नहीं था। हर किसी ने वही किया जो उसे ठीक लगा।” न्यायाधीश 18:1: "उन दिनों में Israelकोई राजा नहीं था।" न्यायाधीश 19:1: "उन दिनों में Israelकोई राजा नहीं था।" और न्यायियों 21:25 में, पुस्तक का अंतिम पद: "उन दिनों में Israelकोई राजा नहीं होता था, सभी लोग जैसा उचित समझते थे वैसा ही करते थे।" इस प्रकार अराजक सामाजिक परिस्थितियाँ विकसित हुईं, और इससे एक राजा की इच्छा पैदा हुई जो अंततः 1 सैमुअल, राजत्व की स्थापना में बदल गई।

3. इसराइल की बार-बार अवज्ञा के बावजूद अनुबंध-पालन करने वाले भगवान के दयालु गैर-योग्य हस्तक्षेप पर जोर तीसरा जोर इज़राइल की बार-बार अवज्ञा के बावजूद अनुबंध-पालन करने

वाले भगवान के दयालु गैर-योग्य हस्तक्षेप पर है। प्रभु ने बार-बार, समय-समय पर उनका उद्धार करके दयालु और दयालु तरीकों से प्रतिक्रिया व्यक्त की - और इसलिए नहीं कि Israelवह उद्धार योग्य था। न्यायियों 6:7 और निम्नलिखित को देखें: "जब इस्राएलियों ने मिद्यान के कारण यहोवा की दोहाई दी, तब उस ने उनके पास एक भविष्यद्वक्ता भेजा, और उस ने उन से कहा, 'इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है...'" यहां आपको एक छोटा सा संदेश मिलता है वाचा के रूप का सूक्ष्म जगत: "'मैं तुम्हें Egyptगुलामी की भूमि से बाहर लाया हूं [यहां मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है]; मैंने तुम्हें तुम्हारे सभी उत्पीड़कों के हाथ से छीन लिया । Egyptमैं ने उनको तेरे साम्हने से निकाल दिया, और उनका देश तुझे दे दिया। मैं ने तुम से कहा, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। एमोरियों के देवताओं की पूजा मत करना जिनके देश में तुम रहते हो [यहां वे सभी काम हैं जो मैंने किए हैं], लेकिन तुमने मेरी बात नहीं सुनी।"

न्यायियों 10:11 और निम्नलिखित में, हम पढ़ते हैं: " यहोवा ने उत्तर दिया, 'जब मिस्रियों, एमोरी, अम्मोनियों, पलिश्तियों, सीदोनियों, अमालेकियों और माओनियों ने तुम पर अन्धेर किया, और तुम ने सहायता के लिथे मेरी दोहाई दी, तब क्या मैं ने तुम्हें उनके हाथ से नहीं बचाया? [यह मैंने किया है, फिर भी क्या तू मेरी ओर फिरा?] परन्तु तू ने मुझे त्यागकर पराये देवताओं की उपासना की है, इसलिये मैं अब तुझे न बचाऊंगा। जाओ और अपने चुने हुए देवताओं की दोहाई दो। जब आप मुसीबत में हों तो उन्हें आपको बचाने दें!' लेकिन प्रभु नरम *हो जाते हैं* / वे प्रभु की दोहाई देते हैं और वह उनका उद्धार करता *है* / इसलिए वह दया और न्याय साझा करता है, वह पश्चाताप का बार-बार अवसर देता है; वह उन्हें पूरी तरह से नष्ट नहीं करता या उन्हें मिटा नहीं देता या उन्हें देश से निर्वासित नहीं कर देता, जैसा कि उसके पास करने का पूरा अधिकार होता।

न्यायाधीशों का अंतर्पाठ 2 राजा 13:23 में एक दिलचस्प पाठ है, जो पुराने नियम के बहुत बाद के समय में, इस्राएल के राजा यहोआश के समय में था। आपने 2 राजा 13:22 में पढ़ा, " यहोआहाज के शासनकाल में उत्पीड़ितों Israelका राजा Aramहजाएल ।" फिर श्लोक 23 है: " परन्तु यहोवा ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के साथ जो वाचा बान्धी थी उसके कारण उन पर अनुग्रह किया, और दया की, और उनकी चिन्ता की [क्यों?]।" आज तक वह उन्हें नष्ट करने या उन्हें

अपनी उपस्थिति से दूर करने के लिए तैयार नहीं है।" यह एक दिलचस्प बयान है क्योंकि ऐसा लगता है जैसे वह कहता है, "आप जानते हैं कि मेरा धैर्य हमेशा के लिए नहीं रहेगा। परन्तु अब तक, मैं तुम्हें अपनी उपस्थिति से दूर करने, और तुम्हें देश से बाहर निकालने के लिए तैयार नहीं हुआ हूँ।" वह वाचा के श्रापों का चरमोत्कर्ष था। यदि आप व्यवस्थाविवरण 28 पर वापस जाते हैं, तो आप उन शापों को सूचीबद्ध देखेंगे - सूखा, बांझपन, टिड्डियाँ और विपत्तियाँ। चरमोत्कर्ष यह है, "यदि तुम अवज्ञा करते रहे, तो एक दिन तुम्हें उस भूमि से बाहर निकाल दिया जाएगा जो मैंने तुम्हें दी है।" और यहाँ यहोआहाज के समय में— "अब तक, मैं ऐसा करने को तैयार नहीं था।" यदि आप न्यायाधीशों के समय में वापस जाते हैं, तो उन्होंने बार-बार उन्हें बचाया और उन्हें भूमि से बाहर नहीं निकाला। इसलिए वह उस वाचा के प्रति वफादार है जो उसने इब्राहीम, इसहाक के साथ बनाई थी और याकूब से दोहराई थी। वह अपने लोगों को नहीं त्यागता.

भजन 106 को देखें , जो इतिहास की इस अवधि का सारांश देता है । Israelश्लोक 34 से आरंभ करते हुए, भजनहार कहता है Israel, " उन्होंने लोगों को नष्ट नहीं किया जैसा कि यहोवा ने उन्हें आदेश दिया था, लेकिन वे राष्ट्रों के साथ मिल गए और उनके रीति-रिवाजों को अपना लिया। उन्होंने अपनी मूर्तियों की पूजा की, जो उनके लिए फंदा बन गई। उन्होंने अपने पुत्रों और पुत्रियों की बलि राक्षसों को दे दी। उन्होंने निर्दोषों का खून बहाया, अपने बेटे-बेटियों का खून बहाया , जिन्हें उन्होंने मूरतों पर चढ़ाया Canaan, और उनके खून से देश अपवित्र हो गया। उन्होंने अपने काम से अपने आप को अशुद्ध किया; उन्होंने अपने कामों से अपना व्यभिचार किया। इस कारण यहोवा अपनी प्रजा पर क्रोधित हुआ, और अपने निज भाग से उसे घृणा हुई। उसने उन्हें अन्यजातियों के वश में कर दिया, और उनके शत्रु उन पर प्रभुता करने लगे। उनके शत्रुओं ने उन पर अत्याचार किया और उन्हें अपनी शक्ति के अधीन कर लिया। " फिर श्लोक 43 पर ध्यान दें: " कई बार उसने उन्हें बचाया, लेकिन वे विद्रोह पर आमादा हो गए और अपने पाप में बर्बाद हो गए। परन्तु जब उस ने उनकी चिल्लाहट सुनी, तब उस ने उनकी परेशानी पर ध्यान दिया; उनके लिये उस ने अपनी वाचा को स्मरण किया, और अपने बड़े प्रेम के कारण वह पीछे हट गया। " तो ये है इस दौर की तस्वीर. उनकी अवज्ञा के बावजूद प्रभु दयालु और वफादार हैं।

नहेमायाह 9:27 में इस अवधि का एक और सारांश है। नहेमायाह अपनी प्रार्थना में कहता

है, “ अतः तू ने उन्हें उनके शत्रुओं के वश में कर दिया, जिन्होंने उन पर अन्धेर किया। परन्तु जब उन पर अन्धेर किया गया, तो उन्होंने तेरी दोहाई दी। तू ने स्वर्ग से उनकी सुन ली, और अपनी बड़ी करुणा से उन्हें छुड़ानेवाले दिए, जिन्होंने उन्हें शत्रुओं के हाथ से बचाया। परन्तु जैसे ही उन्हें विश्राम मिला, उन्होंने फिर वही किया जो तुम्हारी दृष्टि में बुरा था। तब तू ने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ में छोड़ दिया, और वे उन पर प्रभुता करने लगे। और जब उन्होंने फिर तेरी दोहाई दी, तब तू ने स्वर्ग से सुन लिया, और अपनी करुणा से बारम्बार उनको छुड़ाया। तू ने उन्हें चिताया, कि वे तेरी व्यवस्था पर लौट आएं, परन्तु वे अभिमानी हो गए, और तेरी आज्ञाओं का उल्लंघन करने लगे। उन्होंने तेरे नियमों के विरूद्ध पाप किया है, जिनके मानने से मनुष्य जीवित रहेगा। उन्होंने हठ करके तुमसे मुँह मोड़ लिया, हठीले हो गये और सुनने से इन्कार कर दिया। श्लोक 30 पर ध्यान दें: “ कई वर्षों तक तुम उनके साथ धैर्य रखते रहे। तू ने अपने आत्मा के द्वारा अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उनको चिताया। तौभी उन्होंने कुछ ध्यान न दिया, इसलिये तू ने उन्हें पड़ोसी लोगोंके हाथ में सौंप दिया। परन्तु तू ने अपनी बड़ी करूणा से न तो उनका अन्त किया, और न उन्हें त्यागा, क्योंकि तू दयालु और कृपालु परमेश्वर है। इसलिए अब, हे हमारे परमेश्वर, महान, पराक्रमी और भययोग्य परमेश्वर, जो अपनी प्रेम की वाचा का पालन करता है …” तो यही वह चित्र है जो हमें यहां न्यायाधीशों की पुस्तक से मिलता है।

बी. सामग्री: पुस्तक का एक सर्वेक्षण

1. न्यायाधीशों की पुस्तक में कालानुक्रमिक संदर्भ

बी. आपकी रूपरेखा में "सामग्री: पुस्तक का एक सर्वेक्षण" है। न्यायाधीशों की पुस्तक में काफी बड़ी संख्या में कालानुक्रमिक संदर्भ हैं। यदि आप पुस्तक को पढ़ते हैं और सभी कालानुक्रमिक डेटा का पता लगाते हैं, तो यह एक जटिल कालानुक्रमिक समस्या पैदा करता है। तो इस चार्ट और अगले चार्ट में प्रत्येक वर्ष के साथ उत्पीड़न की अवधि की एक सूची है। तो आपके पास 8 वर्षों का मेसोपोटामिया उत्पीड़न है, और फिर ओथनील का उद्धार है जो 40 वर्षों तक चला।

मोआबियों का उत्पीड़न 18 तक चला, और छुटकारा 80 तक चला। और यह पहले नौ अध्यायों में चलता है। फिर यदि आप आगे बढ़ते हैं तो आपको जजशिप और उत्पीड़न के वर्षों के अतिरिक्त संदर्भ मिलते हैं। यदि आप उन सभी को उन दो पृष्ठों की तरह सूचीबद्ध करते हैं, और फिर उन्हें जोड़ते हैं, तो आपको कुल 410 वर्ष मिलते हैं।

अब सवाल यह है कि उस 410 साल को कितना संपीड़ित करना होगा? दूसरे शब्दों में, क्षेत्रीय संघर्ष के ये दौर एक-दूसरे पर कैसे हावी हो सकते हैं? यहां आप निर्गमन की तारीख के सवाल पर वापस आते हैं - कि क्या शुरुआती तारीख का पक्ष लेना है या देर की तारीख का। हम पहले ही इस पर कुछ विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। शीघ्र तिथि के पक्ष में मेरा एक कारण यह है कि न्यायाधीशों की पुस्तक के कालक्रम के साथ सामंजस्य स्थापित करना आसान है। यदि आप निर्गमन के लिए देर की तारीख लेते हैं, लगभग 1290, तो 40 साल बाद आपकी विजय लगभग 1250 ईसा पूर्व होती है, इसलिए विजय 1250 है, और हम जानते हैं कि सुलैमान की अवधि 966 ईसा पूर्व है। यदि आप 1250 से 966 घटाते हैं, तो आपके पास है 284 वर्षों का अंतराल। हम यह भी जानते हैं कि न्यायाधीशों की अवधि के बाद सुलैमान के चौथे वर्ष, एली से सुलैमान तक के समय तक पहुंचने के लिए आपको इसे जोड़ना होगा। एली लगभग 20 वर्ष, शमूएल 40, दाऊद 53 और सुलैमान 4, और तुम्हें 117 वर्ष और मिलेंगे। इसका मतलब है कि जोशुआ से लेकर न्यायाधीशों के अंत तक हमारे पास केवल 167 वर्ष हैं। इसका मतलब है कि आपको उस 410 को घटाकर 167 साल करना होगा।

अब यदि आप निर्गमन की प्रारंभिक तिथि, 1446 ईसा पूर्व लेते हैं, तो विजय 1406 में होगी। (वह 1446 1 राजा 6:1 से सुलैमान की तुलना में 480 वर्ष पहले आता है।) तो विजय 1406 है और सुलैमान का चौथा वर्ष है 966 है। यह 440 वर्ष है, और आपको एली को सुलैमान तक ले जाना है - यह 117 वर्ष है - और फिर आपको 323 वर्ष मिलते हैं। 410 को 323 पर वापस जाना है जबकि 410 को 167 पर वापस जाना है। आप देख सकते हैं कि न्यायाधीशों के अपने कालानुक्रमिक डेटा को 167 वर्षों में संपीड़ित करने की तुलना में 323 वर्षों में संपीड़ित करना आसान है।

मैं उस पर अधिक चर्चा नहीं करना चाहता, लेकिन मुझे इस शीर्षक IV के अंतर्गत आपकी ग्रंथ सूची—पृष्ठ 13, मेरा विश्वास है—का उल्लेख करने दीजिए। बी. एंड्रयू स्टीनमैन का एक लेख है, "द मिस्टीरियस नंबर्स ऑफ द बुक ऑफ जजेज" *जर्नल ऑफ द इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल*

सोसाइटी में प्रकाशित हुआ है। यह बिलकुल ताज़ा है, 2005, और यदि आपकी रुचि हो तो इसमें इसका विवरण है। मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि जजेज में कालक्रम का संपीड़न पुस्तक की सामग्री के अनुरूप है। जब आप किताब पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि देश का एक छोटा सा हिस्सा जुल्मों से प्रभावित था। दूसरे शब्दों में, वे क्षेत्रीय उत्पीड़न थे, इसलिए वे ओवरलैप हो सकते थे। लगभग कोई भी दो न्यायाधीश इसी अवधि के दौरान कम से कम आंशिक रूप से सक्रिय रहे होंगे।

सी. 1200 से 1050 ईसा पूर्व की प्राचीन निकट पूर्वी स्थिति

आइए फिर सी पर चलते हैं: "1200 से 1050 ईसा पूर्व की प्राचीन निकट पूर्वी स्थिति" यदि आप मिस्र के राजवंशों पर वापस जाते हैं, तो आप देखेंगे कि 1222 ईसा पूर्व में मेरनेप्टा के बाद , आपको भ्रम की अवधि मिलती है, और फिर रामेसेस III के साथ। और रामेसेस IV-XI वे कमजोरी के दौर में हैं। तो उस देर की तारीख के तुरंत बाद Exodus, Egyptउन्होंने बाहर अपनी हिस्सेदारी पर नियंत्रण खो दिया Egypt। Egyptआप कह सकते हैं, उसे अपनी सीमाओं की रक्षा करनी थी। वे अपने देश में वापस चले गए और उन्हें अपनी सीमाओं के बाहर के क्षेत्र को नियंत्रित करने की कोई चिंता नहीं थी। उन्हें उन लोगों के हमलों से भी निपटना पड़ा जिन्हें "समुद्री लोग" कहा जाता था, ये वे लोग थे जो क्रेते द्वीप से आए थे और हमला किया था Egypt। यह लगभग 1200 के आसपास है, और कुछ लोग सोचते हैं कि वे पलिश्ती थे जो आसपास थे Gaza। किसी भी दर पर, मुद्दा यह है कि वह Egyptएक प्रमुख शक्ति नहीं रह गई है।

जब आप उत्तर की ओर जाएंगे, तो हित्ती साम्राज्य लगभग 1900 से 1200 ईसा पूर्व तक मजबूत था लेकिन उसका भी पतन हो गया। यह पश्चिमी शत्रुओं से ध्वस्त हो गया जो पश्चिमी क्षेत्रों से आए थे Asia Minor। हमने पहले रामसेस द्वितीय के बारे में बात की थी जिसने हित्तियों से लड़ाई की थी Orontes River। वे एक गतिरोध पर आ गए और एक अनाक्रमण संधि पर हस्ताक्षर किए और एक संधि हुई। वह 1280 ईसा पूर्व में था, इसलिए 1280 में हित्तियों और मिस्रवासी अभी भी लेवंत - के तट पर नियंत्रण के लिए संघर्ष कर रहे थे Mediterranean। लेकिन 1200 तक हित्ती चले गए, और Egyptअपने क्षेत्र में वापस आ गए।

जब आप लगभग 1200 ईसा पूर्व मेसोपोटामिया की ओर बढ़े तो Assyriaकमजोरी के दौर में प्रवेश किया। और Carchemishनजदीक ही Damascusछोटे-छोटे शहर-राज्य हैं। यह सब हमें बताता है कि यह समय Israelकिसी भी प्रमुख विश्व शक्ति से मुक्त है: मिस्रवासी कमजोर थे, हित्ती गायब हो गए थे, और असीरियन कमजोर थे। जब आप न्यायाधीशों की पुस्तक पढ़ते हैं, तो आप पाते हैं कि वे छोटे स्थानीय सीमावर्ती राज्यों - मोआबियों, मिद्यानियों, अम्मोनियों और पलिश्तियों - से चिंतित हैं, न कि प्रमुख विश्व शक्तियों से। पलिश्ती वास्तव में अगला बड़ा खतरा बन गए थे Israel, विशेषकर न्यायाधीशों के काल के अंत तक। वहाँ सैमसन है, जो पलिश्तियों से लड़ना शुरू कर रहा था, और वह 1 शमूएल में आगे बढ़ता है जहाँ पलिश्ती और भी अधिक खतरनाक हो जाते हैं Israel। तो 1200 से लेकर 1050 ईसा पूर्व तक यही स्थिति है।

डी. न्यायाधीशों की संरचना और सामग्री 1. न्यायाधीशों की पुस्तक 1:1-2:5 में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आगे चर्चा की गई है - पहला परिचय

डी. है "न्यायाधीशों की संरचना और सामग्री," और 1. डी. के तहत है "न्यायाधीशों की पुस्तक 1:1 से 2:5 में आगे चर्चा की गई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।" यहोशू की मृत्यु के बाद यह प्रत्येक जनजाति की जिम्मेदारी थी कि वे अपने-अपने क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करें जो यहोशू ने उन्हें सौंपा था। न्यायाधीश 1:1 से 2:5 कई जनजातियों के सैन्य अभियानों का एक सिंहावलोकन देता है। आप पाएंगे कि उन्होंने काम पूरा नहीं किया; उन्होंने वह नहीं किया जो उन्हें करना चाहिए था। उदाहरण के लिए, आप न्यायियों 1:27 में पढ़ते हैं, " परन्तु मनश्शे ने बेतशान या तानाक या दोर या इब्लीम या मगिद्दो और उनके आस-पास की बस्तियों के लोगों को नहीं निकाला, क्योंकि कनानियों ने उस देश में रहने का निश्चय किया था। " पद 29, “ एप्रैम ने वहां रहने वाले कनानियों को न निकाला Gezer, परन्तु कनानी उनके बीच वहीं बसे रहे। पद 30, “ जबूलून ने कित्रोन वा नहलोल में रहने वाले कनानियों को , जो उनके बीच रह गए थे, न निकाला ; लेकिन उन्होंने उन्हें जबरन श्रम के अधीन कर दिया। पद 31, " और आशेर ने एको या Sidonमें रहनेवालों को बाहर नहीं निकाला ।" पद 33, " नफ़्ताली ने बेतशेमेश में रहनेवालों को बाहर नहीं निकाला... "

इसलिए इज़राइल उस पर खरा उतरने में विफल रहा जो उन्हें करने की आज्ञा दी गई थी,

और परिणाम अध्याय 2 के पहले पांच छंदों में वर्णित है। यहां आपको वाचा के रूप का सूक्ष्म जगत फिर से मिलता है। तुम वहाँ पढ़ते हो, “ यहोवा का दूत गिलगाल से बोकिम को गया और कहा, 'मैं तुम्हें वहाँ से निकाल लाया Egyptऔर उस देश में ले आया जिसे देने की मैंने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई थी। मैंने कहा, "मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा कभी नहीं तोड़ूंगा, और तुम इस देश के लोगों के साथ वाचा नहीं बनाओगे, बल्कि उनकी वेदियों को तोड़ दोगे।" फिर भी तुमने मेरी अवज्ञा की है। [यहां बताया गया है कि मैंने क्या किया है, आपने क्या किया है?] आपने ऐसा क्यों किया है? इसलिये अब मैं तुम से कहता हूं, कि मैं उनको तुम्हारे साम्हने से न निकालूंगा; वे कांटे होंगे और उनके देवता तुम्हारे लिथे फन्दा ठहरेंगे। जब यहोवा के दूत ने सब इस्राएलियोंसे ये बातें कहीं, तब लोग ऊंचे स्वर से रोने लगे, और उस स्थान का नाम बोकीम रखा । वहाँ उन्होंने यहोवा को बलिदान चढ़ाए। ”

मुझे लगता है कि यह काफी हद तक किताब के बाकी हिस्सों में वर्णित घटनाओं के क्रम को स्पष्ट करता है। वे कनानियों के साथ बस गए और वे प्रभु से विमुख हो गए, और परिणाम वही है जो आप पुस्तक के शेष भाग में पाते हैं। तो न्यायाधीश 1:1 से 2:5 में आपको उस अवधि की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि मिलती है जिसका वर्णन न्यायाधीशों की पुस्तक करती है।

2. न्यायाधीशों की पुस्तक की उचित समझ के लिए धार्मिक आधार न्यायाधीश 2:6-3:4 - दूसरा परिचय

2. डी के अंतर्गत "न्यायाधीशों की पुस्तक की उचित समझ के लिए धार्मिक आधार: न्यायाधीश 2:6 से 3:4" है। न्यायाधीश 2:6 से 3:4 को कभी-कभी "दूसरा परिचय" भी कहा जाता है। यदि आप पुस्तक की संरचना को देखें, तो आपको दो परिचय मिलते हैं- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और धार्मिक पृष्ठभूमि। पुस्तक के अंत में आपको दो निष्कर्ष मिलते हैं - आपको धार्मिक और नैतिक पतन की वे दो कहानियाँ मिलती हैं। तो संरचनात्मक रूप से पुस्तक दो परिचय और दो निष्कर्षों के साथ पुस्तक-समाप्त होती है, और बीच में आपको छह प्रमुख न्यायाधीशों की कहानियाँ मिलती हैं।

इसलिए इसे कभी-कभी दूसरा परिचय भी कहा जाता है, और यह यहोशू 24:28-41 से लिया गया है। अब मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि, यदि आप यहोशू 24 पर वापस जाते हैं, जो शकेम में वाचा का नवीनीकरण था, तो आप शकेम में उस समारोह के अंत में श्लोक 28 में पढ़ते हैं, "तब

यहोशू ने लोगों को विदा कर दिया, प्रत्येक को अपने-अपने घर भेज दिया। " विरासत। इन बातों के बाद यहोवा का सेवक नून का पुत्र यहोशू एक सौ दस वर्ष की आयु में मर गया। और उन्होंने उसे उसके निज भाग तिम्नात में मिट्टी दी एप्रैम के उत्तर में पहाड़ी देश में Mount Gaashसेरह । Israelयहोशू के जीवन भर और उन पुरनियों की, जो उसके जीवित रहे, और जिन्होंने यहोवा ने उनके लिये जो कुछ किया था, सब कुछ अनुभव किया था, यहोवा की सेवा करते रहे। Israel"

अब न्यायाधीश 2:6 पर वापस जाएँ। ध्यान दें कि यह कैसे यहोशू 24:28 के समान शुरू होता है, " जब यहोशू ने इस्राएलियों को विदा कर दिया, तब वे अपने अपने निज भाग के अनुसार भूमि पर अधिकार करने को गए। यहोशू के जीवन भर लोगों ने यहोवा की सेवा की, और उन पुरनियों ने भी जो उसके जीवित रहे, और जिन्होंने सब बड़े बड़े काम देखे थे जिनके लिये यहोवा ने किया था Israel। नून का पुत्र यहोशू, जो यहोवा का दास था, एक सौ दस वर्ष की आयु में मर गया। और उन्होंने उसे उसके निज भाग तिम्नात में मिट्टी दी यह एप्रैम के उत्तर में पहाड़ी देश में है Mount Gaash। उस सारी पीढ़ी के अपने पुरखाओं के पास इकट्ठे हो जाने के बाद एक और पीढ़ी बड़ी हुई, जो न तो यहोवा को जानती थी और न जानती थी कि उसने क्या किया है Israel। तब इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया…"

यह जोशुआ की किताब के अंत से जुड़ता है और फिर कहानी को आगे बढ़ाता है। जोशुआ के लेखक बताते हैं कि बेवफाई की प्रवृत्ति एक नई पीढ़ी के उदय के कारण है - यह न्यायाधीशों 2:10 में है। उन्होंने विजय के समय प्रभु के महान कार्यों को नहीं देखा था: "उस पूरी पीढ़ी के अपने पूर्वजों के पास एकत्रित होने के बाद, दूसरी पीढ़ी बड़ी हुई और यहोवा को और उसने उनके लिए जो कुछ किया, उसे जान लिया।" श्लोक 12, "उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा को, जो उन्हें बाहर ले आया, त्याग दिया Egypt। वे अपने आस-पास के लोगों के विभिन्न देवताओं की पूजा करते थे।" चूँकि वे यहोवा से विमुख हो गए और अन्य देवताओं की पूजा करने लगे, इसलिए यहोवा ने उन्हें अन्य लोगों के हाथों में अत्याचार करने के लिए सौंप दिया। फिर आप न्यायियों 2:13 में पढ़ते हैं, "उन्होंने उसे त्यागकर बाल और अश्तोरेत देवियों की उपासना की । यहोवा ने क्रोध में आकर उन्हें लुटेरों के वश में कर दिया, जिन्होंने उन्हें लूट लिया। Israelउसने उन्हें चारों ओर उनके शत्रुओं को बेच दिया, जिनका वे अब विरोध करने में सक्षम नहीं थे। और जब जब Israelवे लड़ने को निकलते

थे, तब तब यहोवा का हाथ उनको पराजित करने के लिये उनके विरूद्ध रहता था, जैसा उस ने उन से शपय खाई थी। वे बहुत संकट में थे ।" फिर, पद 16, " प्रभु ने न्यायाधीशों को खड़ा किया जिन्होंने उन्हें इन हमलावरों के हाथों से बचाया। "

परन्तु फिर तुम ने पढ़ा, कि जिस मार्ग पर उनके पिता आज्ञाकारिता में चले थे, उस से वे शीघ्र ही फिर गए। पद 18 कहता है, " जब जब यहोवा ने उनके लिये किसी न्यायी को खड़ा किया, तब तब वह उसके संग रहा, और जब तक न्यायी जीवित रहा, तब तक वह उनको शत्रुओं के हाथ से बचाता रहा; क्योंकि जब वे उन पर अन्धेर करने और सताने वालों के कारण कराहते थे, तब यहोवा को उन पर दया आई। परन्तु जब न्यायी मर गया, तो लोग अपने पुरखाओं से भी अधिक भ्रष्ट होकर दूसरे देवताओं के पीछे चलने लगे, और उनकी सेवा करने लगे। "

तो आपको प्रभु से विमुख होने का यह चक्र मिलता है, उत्पीड़न, कुछ लोग कहते हैं पश्चाताप, और फिर मुक्ति। आपने देखा कि इस परिचय में पश्चाताप के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। यहाँ निश्चित रूप से यही चक्र है: पाप, उत्पीड़न, शायद पश्चाताप (कम से कम मदद के लिए रोना), और फिर मुक्ति। यह फिर से व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पहले से उल्लिखित पैटर्न है। यहां आप वास्तविकता को देख सकते हैं, आप कह सकते हैं कि प्रभु ने जो कहा था वह घटित होगा।

न्यायाधीश और व्यवस्थाविवरण कनेक्शन और वाचा इतिहासकार

जैसे ही आप ऐतिहासिक अध्ययन में उतरते हैं, यह अक्सर कहा जाता है कि हेरोडोटस इतिहास का पिता था। इसका मतलब यह है कि हेरोडोटस, जो लगभग 484-425 ईसा पूर्व रहते थे, पुराने नियम से बहुत बाद के थे। अक्सर यह दावा किया जाता है कि हेरोडोटस से पहले कोई सच्चा इतिहास नहीं था; आपके पास केवल राजाओं की उपलब्धियों और युद्धों के इतिहास का इतिहास था, लेकिन इस अर्थ में कोई सच्चा इतिहास-लेखन नहीं था कि घटनाओं को इतिहास के प्रवाह में कुछ बड़े अर्थों के संदर्भ में रखा जाता है। लेकिन मुझे लगता है कि जब आप न्यायाधीशों और जोशुआ की पुस्तकों को देखते हैं, तो आप कह सकते हैं कि इन पुस्तकों में इतिहास का वास्तविक दर्शन मिलता है। हम हेरोडोटस के समय से लगभग एक सहस्राब्दी पहले के हैं। न्यायाधीशों की

पुस्तक में संग्रहीत इतिहास वह है जो व्यवस्थाविवरण की पुस्तक और व्यवस्थाविवरण के धर्मशास्त्र पर आधारित है। उस अर्थ में, आप कह सकते हैं कि जोशुआ और न्यायाधीशों की पुस्तकें धार्मिक इतिहास हैं, लेकिन इस अर्थ में नहीं कि इतिहास को किसी धार्मिक योजना द्वारा संकुचित या निर्देशित किया गया है या उस धार्मिक योजना द्वारा गलत तरीके से बनाया गया है। यह इस बात का वास्तविक प्रतिबिंब है कि चीज़ें कैसी थीं। परमेश्वर व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के प्रावधानों के अनुसार अपने लोगों के जीवन में अपने उद्देश्यों को पूरा कर रहा था। यदि वे आज्ञाकारी होते तो वे आशीर्वाद का आनंद लेते , और यदि वे अवज्ञाकारी होते तो वे अभिशाप का अनुभव करते।

तो मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि जोशुआ और न्यायाधीशों सहित इन ऐतिहासिक पुस्तकों में इस अवधि की घटनाओं के अर्थ की एक भविष्यवाणी व्याख्या है जिसे "वाचा इतिहासकार" कहा जाता है - एक इतिहासकार जो वाचा से परिचित है और उस दस्तावेज़ की श्रेणी में इज़राइल के इतिहास का वर्णन कर रहा है। आप उस लेखक को "व्यवस्थाविवरण इतिहासकार" कह सकते हैं। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, मुझे "ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहासकार" लेबल का उपयोग करना पसंद नहीं है क्योंकि यह मार्टिन नोथ की उस ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास अवधारणा से जुड़ा हुआ है - जो कि जोशुआ टू किंग्स के एक निर्वासित लेखक हैं। वह इसे निर्वासन के समय में रहने वाले एक इतिहासकार के रूप में देखते हैं जो पूरे Israelइतिहास को व्यवस्थाविवरण के धर्मशास्त्र की श्रेणियों में फिट बैठता है। मैं उस दृष्टिकोण की पुष्टि नहीं करना चाहता.

यह स्पष्ट है कि न्यायाधीशों की पुस्तक व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के धर्मशास्त्र के साथ अच्छी तरह से फिट बैठती है। लेकिन जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी, व्यवस्थाविवरण को मूसा के समय में स्थित होना चाहिए जैसा कि यह दावा किया गया है, और इन बाद की पुस्तकों के आधार के रूप में - इस मामले में जोशुआ और न्यायाधीशों के रूप में। लेकिन यहाँ आपके पास न्यायाधीशों की पुस्तक में जो कुछ है उसे समझने के लिए एक धार्मिक आधार है। खैर, हमारे पास समय नहीं है, इसलिए हम अगली बार वहां से उठाएंगे।

आंद्रे सैंटोस द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित

एलिजाबेथ फिशर
द्वारा अंतिम संपादन टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया